नीम के उपयोग

कृषि क्षेत्र में

- औजार के लिये लकड़ी
- छाया
- शहद, मृदा
- रोगजनक रोधी
- कीटनाशक
- खाद

घरेलु स्तर पर

- कीटरोधी
- भोजन संरक्षण
- ईंधन
- कीटनाशक

वनीय क्षैत्र में

- पारिस्थितिकी तन्त्र में
- मृदा उर्वरकता बढ़ाने के लिये
- ईंधन

औषधी के रुप में

- रोगजनक रोधी
- कैंसर प्रतिरोधी
- मधुमेह प्रतिरोधी
- मलेरिया रोधी
- घाव पर मलहम के लिये
- त्वचा रोग हेतु

जिस घर में काम आए नीम
उस घर में नहीं जाये हकीम

मुद्रक : फाईन आर्ट प्रिन्टर्स, जाटवाड़ी, उदय. फो.: 0294-2411406, 9828576207

नीम

एक जीवनदाता वृक्ष

वैज्ञानिक नाम
एजाडइरेक्टा इन्डीका

राजस्थान वन उपज संग्राहक एवं प्रशोधक समूह समर्थक समिति

282, पुराना चुंगीनाका, फतेहपुरा, उदयपुर (राज.)
फोन एवं फैक्स : 0294-2451478
email: samarthak@sancharnet.in

परिचय :-

नीम मूल रूप से भारतीय प्रजाति का एक सदाबहार वृक्ष है। एक महत्वपूर्ण औषधीय वृक्ष होने के कारण आज औषधीय जगत मे इसकी मांग लगातार बढ़ती जा रही है । भारत में, वैदिक काल से ही नीम एक रहस्यमय वृक्ष के रुप मे जाना जाता रहा है अपने औषधीय एवं कीटनाशक गुणों के कारण ही भारतीय संसति में इसे अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। नीम का वानस्पतिक नाम एजाडइरेक्टा इन्डीका है।इसका सम्बन्ध मोहगनी वृक्ष की प्रजाति से है।

नीम का वृक्ष मध्यम आकार का होता है। इसकी लम्बाई लगभग 12 से 18 मी. तक होती है। तना मोटा व घना है। वृक्ष की छाल छिद्र युक्त, भूरा रंग लिए हुऐ होती है। पत्तियां संयुक्त , लगभग 20-38 सेमी. लम्बी एवं लहराती हुई होती है। पर्ण टहनियों सें जुडे हुऐ, 6-7 के समूह में पायी जाती है। पुरानी पत्तियां फरवरी-मार्च में गिर जाती है व अप्रेल-मई (बसन्त) में नयी पत्तियां आती है।

जलवायु :-

नीम शुष्क वनों में प्रा-तिक रूप से उगता है एवं पुरे भारत मे सामाजिक वनिकी के रूप मे उगाया जाता है। वनीकरण के लिए उष्ण तथा कम वर्षा वाले क्षेत्र नीम की खेती के लिए सर्वाधिक उपयोगी है। नीम की वातावरण, जलवायु व भौगोलिक कारकों के साथ अनुकूलता पाई जाती है। ये शुष्क अर्द्धशुष्क उष्णकटिबंधीय, अर्द्ध उष्णकटिबंधीय क्षेत्रो में $0^{\circ}.45^{\circ}$ तापमान में उग सकते है। इन्हें औसतन 450 से 1200 मिमी वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है परन्तु 130 मिमी वार्षिक वर्षा की स्थिति मे अनूकुलित होता है। नीम की वृद्धि के लिए काली कपासिय मृदा अत्यन्त उपयोगी होती है।

नीम का प्रसार :-

नीम के पेड़ो मे स्वत: स्थापन की अद्‌भुत क्षमता होती है अत: इसे पनपने में कोई कठिनाई नहीं होती है। इसे लगभग सभी प्रकार की भूमि मे उगाया जा सकता है परन्तु बलुई दोमट मिट्‌टी मे बढ़वार अच्छी होती है। सामान्यत: इसे बीजों द्वारा उगाया जाता है परन्तु जड़ या तने की कलम द्वारा भी उगाया जा सकता है। अनुकूल परिस्थितियों मे यह तेजी से वृद्धि करता है उगने के पहले दो वर्षों का तना

उपयोग :-

सामान्यत नीम को औषधीय वृक्ष माना जाता है नीम की पत्तियों को उबालकर उससे स्नान करते है जिससे घाव अथवा चकता से बचा जा सके। इसके अतिरिक्त त्वचा सम्बन्धी बीमारीयों की रोकथाम के लिये नीम जल का प्रयोग होता है। नीम के बीजों से परिष्त तेल का प्रयोग विभिन्न बीमारीयों की रोकथाम मे किया जाता है। जैसे आमाशय अल्सर, गठिया, विम संक्रमण। बीजों की खली को कपास, गन्ना, धान के खेतों में खाद के रुप में प्रयोग किया जाता है। पत्तियों बीजा व छाल के अलावा नीम की लकड़ी भी बहुउपयोगी है। इससे फर्नीचर, कृषक औजार, छोटे औजार, पुल ड्रम बोर्ड इत्यादी निर्मित होते है। अत: यह अतिश्योक्ति नहीं होगी कि नीम का प्रत्येक भाग दैनिक जीवन मे उपयोगी है। मानव जीवन मे इसका उपयोग अनेक उद्धेश्यों की पूर्ति के लिये किया जाता है ।

छाल	थकान, कफ, बुखार, भूख कम होने की स्थिति व घावों के लिये, प्यास व चर्म रोगों को भी दूर करती है।
पत्तियां	रक्तशोधक, बुखार में, त्वचा में निखार लाती है, व कीटनाशक के रुप में।
फल	चर्म रोग में, मधुमेह में, रक्तशोधन में
फूल	कफ, पित्त व वात
बीज	विम विकार में

औषधीय उपयोग :-

आय के साधन के रुप मे नीम :-

नीम का वृक्ष साधारण: 6-8 वर्ष की अवस्था में फल देना आरम्भ कर देता । 10 -12 वर्ष का पेड़ 5-8 किलो व 20 वर्ष का पेड़ 20 से 30 किग्रा बीजों का प्रतिवर्ष उत्पादन करता हैं। नीम लगभग 100 वर्ष की आयु तक फलता